

स्वतंत्रता संग्राम की राजनैतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

शशिकांत दुबे

सहायक प्राध्यापक

सेवासदन महाविद्यालय

बुरहानपुर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, जिसने देश को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाई। इस संग्राम की राजनैतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने से हमें यह जानकारी मिलती है कि कैसे भारतीय समाज ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया और स्वतंत्रता प्राप्त की।

राजनैतिक परिस्थितियाँ

“राजपूत काल के बाद से ही मुस्लिम शासन के अन्तर्गत रहने के कारण भारतीयों की आत्माएँ मर गई थीं।”¹ इसलिए वे विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला नहीं कर सके और एक के बाद एक कुचल दिये गये। उन्हें अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया। यह भारतीय चरित्र की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। इसके कारण ही हम स्वाधीनता के मूल्य खोते चले गये।

“अंग्रेजों ने भारत में सन् 1600 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी।”² उस समय भारतीय नरेश मुगल सम्राट अकबर थे। अकबर से औरंगजेब के काल तक अंग्रेजों और अन्य कम्पनियाँ केवल व्यापार में लगी रहीं। औरंगजेब के अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण से मुगल साम्राज्य पतन की ओर बढ़ने लगा। इस कारण केन्द्रिय शासन कमजोर हो गया, इसका फायदा

भारतीय सामंतों के साथ अंग्रेजों ने भी उठाया। कर्नाटक की लड़ाइयों तक कंपनी भारतीय राजाओं से युद्ध नहीं कर सकी। इसके पूर्व में अंग्रेजों ने कर्नाटक के युद्धों में फ्रांसीसियों की शक्ति को समाप्त कर दिया। वे केवल अप्रत्यक्ष रूप से ही किसी भारतीय राजा के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष कर सकते थे। प्लासी के युद्ध से अंग्रेज कंपनी एक व्यापारिक के साथ राजनैतिक संस्था भी बन गई।

प्लासी का युद्ध भारतीयों के इतिहास में अंग्रेजों के प्रभुत्व और प्रसार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। यह युद्ध बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच हुआ था। सन् 1757 के प्लासी के युद्ध का राजनीतिक महत्व अधिक है। इस युद्ध से सिराजुद्दौला का अंत हो गया और बंगाल का नया नवाब मीर जाफर बना दिया गया। जब मीर जाफर अंग्रेजों के लिए किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं बचा तो उन्होंने एक योग्य एवं दक्ष व्यक्ति मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया।

चूँकि मीर कासिम योग्य एवं अनुभवी था, अतः वह बंगाल में सुधार लाना एवं अंग्रेजों के प्रभाव को उतार फेंकना चाहता था। अतः अंग्रेज उससे नाराज हो गये। इसका परिणाम बक्सर का युद्ध था। बक्सर का युद्ध सन् 1764 में अंग्रेजों और भारतीय नरेशों बंगाल का नवाब मीर कासिम,



अवध का नवाब सुजाऊदौला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं ने मिलकर लड़ा था। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई थी। इस युद्ध के पहले और बाद की घटनाओं ने भारत के राजनीतिक खोखलेपन और सैनिक दुर्बलताओं को उजागर किया। इससे यह बात स्पष्ट हो गई थी कि राजनीतिक षडयंत्र, कुचक्र, कूटनीति और युद्ध में अंग्रेज भारतीयों की अपेक्षा अधिक सुसज्जित और श्रेष्ठ हैं। अपनी कूटनीति का प्रयोग भारत के अन्य प्रदेशों में करने लगे। भारत की राजनीतिक दुर्बलताओं का लाभ अंग्रेजों ने साम्राज्य विस्तार के लिए उठाया।

सन् 1757 से लेकर सन् 1857 तक बंगाल में प्लासी के युद्ध से लेकर पंजाब में द्वितीय सिख युद्ध तक तथा झांसी राज्य को अंग्रेजी राज्य में विलय करने तक की दीर्घकालिक अवधि में अंग्रेजों ने अधिकांश भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इसमें युद्ध, बलात कानून, जैसे दत्तक निषेध, कूटनीति, छल, प्रपंच, कुशासन, हड़पनीति सभी प्रकार के साधनों का उपयोग किया था। इससे भारतीयों के मन में उनके प्रति तीव्र असंतोष और घोर विरोध फैल गया, जिसका परिणाम सन् 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम था। इसमें भारतीयों ने यह बता दिया कि इस देश का जनमानस अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध है। इस स्वतंत्रता संग्राम में सभी वर्गों के लोगों ने भाग लिया। राजा, किसान, मजदूर अमीर-गरीब, बुद्धिवादी सभी अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार तन, मन, धन से इस स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। सन् 1857 का विप्लव भारतीय इतिहास में बड़ी ही महत्वपूर्ण घटना है, किंतु यह संग्राम पूर्ण रूप से सफल नहीं हुआ। क्योंकि यह एक निश्चित समय पर नहीं हुआ बल्कि अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग दिनों में

हुआ। इस संग्राम से भारतीयों में राष्ट्रीयता की चेतना जागृत हो गई और अंग्रेजों को लगा भारत पर अधिक दिनों तक शासन नहीं किया जा सकता है। सन् 1858 में महारानी विक्टोरिया ने भारत के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण घोषणा पत्र निकाला। इससे भारत में कंपनी राज्य के युग का अंत हुआ एवं भारत अब सीधे ब्रिटिश ताज के अधीन आ गया।

इस घोषणा पत्र में रानी ने घोषित किया कि “अब साम्राज्य विस्तार नहीं होगा एवं सभी से साथ उनके स्टेटस के हिसाब से व्यवहार होगा। इसके व्यापक प्रभाव स्वरूप देश के शासन की बागडोर ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथों में चली गई।”³ महारानी विक्टोरिया के शासन से नई व्यवस्था का उदय हुआ। अंग्रेजों ने अपनी आर्थिक शैक्षणिक और प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन किया। भारतीय समाज के आवश्यकताओं को परखा गया। शिक्षा पद्धति, अर्थनीति, यातायात के साधनों में सुधार किया गया। पुराने धार्मिक संस्कारों और रीति-नीतियों में तालमेल बैठाने की चेष्टा की गई। इस प्रकार नए और पुराने के सामंजस्य के साथ उसे अपने अधि-क्षेत्र में लेने का प्रयास हुआ। आधुनिकीकरण के विभिन्न प्रयास आरंभ किए गए जिससे देश में एक नई चेतना का विकास हुआ और भारतीय कुछ नया सोचने के लिए बाध्य हुए। नए-नए संगठन बने। अनेक संस्थाओं का निर्माण हुआ जिसमें ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि सामाजिक विकास में इनका विशेष योगदान था। इन संगठनों ने भारतीय समाज को जागृत किया। इसमें सबसे पहले मिल का पत्थर माने जाने वाले व्यक्ति राजा राममोहन राय थे। इन्होंने भारतीय समाज में फैली बुराइयों,

छुआछूत तथा आडंबरों को दूर करने का प्रयास किया।

सन् 1893 में स्वामी विवेकानंद जी ने रामकृष्ण परमहंस के शिष्य रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने मुंबई में की थी। “गतानुगतिकता के विरोध और बौद्धिकता के समावेश में आर्य समाज और ब्रह्म समाज दोनों समान हैं, किंतु जहां ब्रह्म समाज समाज के उच्च स्तर में बौद्धिक और आत्मिक चेतना ला सका, वहां आर्य समाज ने निम्न वर्ग में भी जागरण को स्थान दिया।”⁴

“आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में देश को एक नवीन स्फूर्ति प्रदान की।”⁵

इन संस्थानों में थियोसाफिकल सोसाइटी की अपनी भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। इसमें श्रीमती एनी बेसेंट का नाम अग्रणी है, इन्होंने अपनी असाधारण व्यक्तित्व के कारण शिक्षित भारतीयों को आकृष्ट किया और समाज में नई चेतना जाग्रत की।

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। तिलक ने कहा कि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है हम इसे लेकर रहेंगे। इस प्रकार भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसाफिकल सोसायटी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के फलस्वरूप ही यह जागृति का कार्य किया गया, इससे जनता में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए एक लहर दौड़ गई।

सामाजिक परिस्थितियाँ

अंग्रेज अपने आप को श्रेष्ठ शासन व उच्च नस्ल के मानते थे। वे भारतीयों को हेय दृष्टि से देखते

थे, उनका अपमान करते थे, मजदूर वर्ग को बर्बरता से मारते पीटते थे और अनेक भारतीयों की हत्या करते थे। इसकी कोई सुनवाई नहीं होती थी और अंग्रेजों को कोई दंड भी नहीं मिलता था। रेल की प्रथम श्रेणी का टिकट भारतीयों को नहीं दिया जाता था सामाजिक और राजकीय उत्सव में भारतीय अंग्रेजों के साथ उठ बैठ नहीं सकते थे। यूरोपियन द्वारा संचालित होटलों और क्लबों में भारतीयों का प्रवेश निषेध था। अंग्रेज सैनिक गांव में लगे छावनियों में कृषकों और श्रमिकों पर अत्याचार करते थे। इस प्रकार ऐसे अत्याचार और अपमानजनक अमानुषिक व्यवहार से अंग्रेजों के प्रति भारतीयों का असंतोष बढ़ता ही चला गया।

अंग्रेज भारत में सदा ही विदेशी बन कर रहे उन्होंने भारतीयों के बीच कोई सामाजिक और सांस्कृतिक कड़ी नहीं बनाई थी। उनमें कोई परस्पर संपर्क नहीं था। उन्होंने सदा ही पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का वर्ण किया। अंग्रेजों ने सामाजिक रीति-रिवाज और रूढ़ियों जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, शिशु हत्या आदि को अवैध घोषित किया और विधवा विवाह को कानूनी और न्याय संगत कर दिया। संपत्ति के कानून के अनुसार धर्म परिवर्तन पर किसी व्यक्ति को उनके पैतृक संपत्ति और जायदाद से वंचित नहीं किया। जनता ने ऐसे कानून वह प्रतिबंधों को समाज में हस्तक्षेप माना इससे सामाजिक असंतोष बढ़ा।

पाश्चात्य शिक्षा और प्रशासकीय सुधार के कारण जैसे उन्होंने स्कूल और कॉलेज की स्थापना की और पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार किया। स्त्री शिक्षा के लिए कन्या शालाएं खोली गई प्रशासन में सुधार और रेल, तार, डाक आदि नए वैज्ञानिक साधन अपनाए गए। इन साधनों को भारतीयों ने

संदेह की दृष्टि से देखा इसको धर्म, समाज व संस्कृति पर प्रहार माना। उक्त कर्म से असंतोष में और भी अधिक वृद्धि हो गई। यद्यपि राजा राममोहन राय जैसे मनीषियों ने न्याय संगत सुधारो के लिए स्वयं भी प्रयास किये और एक चेतना जगाने का कार्य किया पर अंग्रेजों के प्रति उपजी असंतोष की लहर बढ़ती गई।

धार्मिक हस्तक्षेप

हिंदुओं की सामाजिक व्यवस्था धर्म पर आधारित है और जीवन धार्मिक संस्कारों से नियंत्रित है। अंग्रेजों के सुधारो व शिक्षा को हिंदुओं ने धर्म के विरुद्ध माना। अंग्रेजों ने ईसाई धर्म प्रचार के लिए भारत भेजे पादरियों ने हिंदू और मुसलमान के धर्म की कटु आलोचना की गई, धार्मिक प्रथाओं और विश्वासों पर गहरे आक्षेप किए गए, उनकी खुलेआम हंसी उड़ाई गई। धर्म के मूल आधार को चुनौती दी गई और ईसाई धर्म का खूब धुँआधार प्रचार किया गया। यहां तक जेल में भी बंदियों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाने लगी। स्कूलों में बाइबल का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया। अंग्रेजी सरकार ईसाई धर्म प्रचार में अपना पूरा समर्थन दे रही थी। ईसाई धर्म अपनाने वाले को अंग्रेजी सरकार सभी प्रकार की सुविधायें देती थी। सन् 1850 में अंग्रेजों ने एक कानून बनाकर जिसमें ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति को पैतृक संपत्ति का अधिकार होगा। इससे भारतीयों में यह भावना फैल गई कि अंग्रेज सरकार जाति व्यवस्था को नष्ट कर देगी। भारतीयों को ईसाई बना देगी। इससे अंग्रेजी शासन के प्रति असंतोष, भय और आशंका उत्पन्न हो गई। तथा अंग्रेजों ने धार्मिक अनुदान समाप्त कर दिए इससे असंतोष बढ़ता गया।

आर्थिक स्थिति

अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी और अंग्रेज व्यापारियों को कर मुक्त व्यापार, नमक, पान, तमाखु , नील एवं गरम मसाले तथा अफीम के व्यापार पर एकाधिकार की सुविधाएं दी गई थी। इससे भारतीयों का आर्थिक शोषण हुआ। दूषित अंग्रेजी व्यापारिक और औद्योगिक नीति इंग्लैंड के हितों के अनुसार कार्य करती थी इससे भारतीय वस्तुओं के आयात करो को बढ़ावा दिया। इससे भारतीय उद्योग बंद हो गए। इससे हजारों भारतीय कारीगर और श्रमिक बेकार हो गए और भारतीय व्यापार क्षतिग्रस्त हो गया। कृषि पर निर्भरता बढ़ने लगी। परंपरागत आर्थिक ढांचा पूर्णतः नष्ट हो गया इस शोषण और विनाश के कारण कृषकों, दस्तकारों हस्तशिल्पों और बड़ी संख्या में परम्परागत जमींदारों और प्रधानों को दरिद्र बना दिया इससे बेरोजगारी गरीबी और दरिद्रता तथा निम्न जीवन स्तर में बहुत वृद्धि हुई। अंग्रेज सरकार ने कृषि पर ध्यान नहीं दिया इससे खाद्यान्नों की कमी, अकाल, बेरोजगारी, महामारी में बहुत ही वृद्धि हुई। अंग्रेजों ने भारतीय कृषि और उद्योग पर कई प्रकार के कर लादे गए इससे जनता का आर्थिक शोषण खूब हुआ।

निष्कर्ष

अंग्रेजों की बुरी नीयत और अत्याचारों से पीड़ित जनता ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह का वातावरण निर्मित हुआ। विक्टोरिया के शासनकाल में यद्यपि कुछ सुधार हुए पर परतंत्रता के भाव और आत्म सम्मान पर लगने वाली चोट हमेशा भारतीयों को आँसूती रही। सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक रूप से भी अंग्रेजों ने जो अपनी नीतियां निर्धारित की उनसे भी असंतोष बढ़ा परिणामतः स्वतंत्रता की चिंगारी जो दासता की राख से ढकी थी धीरे-धीरे जोर



पकड़ने लगी। और एक दिन मशाल के रूप में
प्रज्ज्वलित हुई। इस मशाल को जलाने में
कवियों, साहित्यकारों और हमारे मनीषियों ने
अथक परिश्रम किया।

संदर्भ ग्रंथ

- 1 श्रीधर पाठक तथा हिन्दी पूर्व स्वछन्दतावादी काव्य,
डॉ. रामचन्द्र मिश्र, पृष्ठ 50
 - 2 आधुनिक भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक
इतिहास, बी. एन. लुनिया, पृष्ठ 07
 - 3 आधुनिक काव्य धारा, केशरीनारायण शुक्ल, पृष्ठ
28
 - 4 हिन्दी कविता में युगान्तर डॉ. सुधीन्द्र पृष्ठ 14
 - 5 श्रीधर पाठक तथा हिन्दी पूर्व स्वछन्दतावादी काव्य,
डॉ. रामचन्द्र मिश्र, पृष्ठ 55
-